International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

पंडित गोपीनाथ कविराज के साहित्य में सूर्यविज्ञान

अर्पित मीणा

साँची बौद्ध – भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय साँची, रायसेन (मध्यप्रदेश)

सारांश – गोपीनाथ कविराज जी के अनुसार, सूर्य केवल एक खगोलीय पिंड नहीं है, बल्कि यह आध्यात्मिक ऊर्जा का स्रोत है। सूर्य का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि यह जीवन और चेतना का प्रतीक है। तंत्र शास्त्र में सूर्य को आत्मा का प्रतीक माना जाता है। गोपीनाथ कविराज जी ने सूर्य को आत्मा की शुद्धि और जागरण के लिए महत्वपूर्ण माना। उनके अनुसार, सूर्य की ऊर्जा का सही उपयोग कर श्रष्टि के कई तत्वों की रचना की जा सकती है।

कुंजी शब्द – सूर्य विज्ञान, ज्ञान, तंत्र, योग, प्राण, चेतना, साधना ।

• प्रस्तावना –

महामहोपाध्याय पंडित गोपिनाथ कविराज जी गोपीनाथ कविराज जी एक महान संस्कृत विद्वान और दार्शनिक थे, जिन्होंने तंत्र साधना और योग के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है उनका जन्म 7 सितंबर 1987 को जैसोर जिले में हुआ जो अब के बांग्लादेश में स्थित है, गोपिनाथ कविराज जी इलाहबाद विश्वविद्यालय ने संस्कृत में शिक्षा ग्रहण कर काशी संस्कृत महाविद्यालय का प्रचार्य बने, कविराज जी ने बाल्यकाल से ही योग एवं साधना का बीज पड़ा था।[1] वह परमहंस विशुद्धानंद जी के संपर्क मैं आते ही तीव्रता के साथ प्रतिस्फुटित हो उठा,

[1] अवस्थी रमेशचंद्र (1996), *तन्त्राचार्य गोपीनाथ कविराज और योग–तंत्र–साधना*, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

गोपिनाथ कविराज जी ने दर्शन,संस्कृत,साधना और तंत्र संबधी कई रचना की।[2] गोपिनाथ कविराज जी ने अपने गुरु द्वारा वर्णित सूर्यविज्ञान को अपने साहित्यों में स्थान दिया और सूर्यविज्ञान की गूण बातो को जनसामान्य तक प्रचारित ओर प्रसारित किया उनके द्वारा इसे चमत्कार से पृथक कर मोटे तौर पर वैज्ञानिक सिद्धातों से समझाया गया। गोपिनाथ कविराज जी द्वारा सूर्यविज्ञान से पदार्थ निर्माण, की बात कही ओर कैसे सूर्यविज्ञान सिद्धान्त कार्य करता है यह बतलाया। गोपिनाथ कविराज जी महान सिद्ध साधक ,योगी ओर विद्वान थे उन्हें अपनी रचनाओं ओर साहित्य ज्ञान के आधार पर महामहोपाध्याय की उपाधि से अलंकृत किया गया। पंडित गोपिनाथ कविराज जी को भारत सरकार ने 1964 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया था। वे अपने समय के महान विद्वानों में से एक थे और उन्हें संस्कृत साहित्य, तंत्र साधना और भारतीय अध्यात्मिक परंपराओं के गहरे ज्ञान के लिए जाना जाता है। सूर्यविज्ञान पर उनके दृष्टिकोण को समझने के लिए, हमें उनके तांत्रिक और योगिक सिद्धांतों को ध्यान में रखना होगा।

- **सूर्यविज्ञान**

सूर्य विज्ञान, जिसे 'सौर भौतिकी' भी कहते हैं, खगोल भौतिकी की वह शाखा है जो सूर्य के अध्ययन से संबंधित है। इसमें सूर्य की हर एक चीज का अध्ययन किया जाता है, जैसे कि उसकी बनावट, संरचना, गतियों, वातावरण और पृथ्वी व सौरमंडल पर उसका क्या प्रभाव पड़ता है।[3]

आंतरिक संरचना : यह सूर्य के सबसे भीतरी हिस्से यानी कोर, विकिरण क्षेत्र (रेडिएशन जोन) और संवहन क्षेत्र (कन्वेक्टिव जोन) का अध्ययन करता है।

वायुमंडल : यह सूर्य के वायुमंडल की बाहरी परतों, जैसे प्रकाशमंडल (फोटोस्फियर), वर्णमंडल (क्रोमोस्फियर) और किरीट या कोरोना का अध्ययन करता है।

[2] महामहोपध्याय, प. गोपीनाथ कविराज (2015), *सनातन साधना की गुप्त धारा,* विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

[3] Solar Science - NASA Science https://science.nasa.gov/heliophysics/focus-areas/solar-science/

प्लाज्मा का अध्ययन : सूर्य में मौजूद अत्यधिक गर्म और आयनित गैस (प्लाज्मा) की प्रकृति और व्यवहार का अध्ययन करना भी सौर भौतिकी का एक हिस्सा है।

सौर गतिविधियाँ: इसमें सूर्य पर होने वाली घटनाओं, जैसे सौर कलंक (सनस्पॉट), सौर ज्वाला (सोलर फ्लेयर), और कोरोनल मास इजेक्शन (सीएमई) का अध्ययन किया जाता है।

सौर ऊर्जा: यह सूर्य से निकलने वाली ऊर्जा और उसके पृथ्वी तक पहुँचने के तरीके का अध्ययन करता है, जिसमें सौर विकिरण और इसके उपयोग शामिल हैं।

- **सूर्य विज्ञान का महत्व:**

पृथ्वी पर जीवन: सूर्य का अध्ययन यह समझने के लिए महत्वपूर्ण है कि उसकी ऊर्जा और विकिरण पृथ्वी पर जीवन को कैसे प्रभावित करते हैं। सौर विस्फोटों और अन्य गतिविधियों का अंतरिक्ष मौसम पर असर पड़ता है, जो हमारे उपग्रहों और संचार प्रणालियों को प्रभावित कर सकता है। सूर्य हमारे सबसे करीब का तारा है, इसलिए इसका गहन अध्ययन हमें अन्य तारों को बेहतर ढंग से समझने में मदद करता है।[4]

- **साहित्य अवलोकन –**

1) कविराज महामहोपाध्याय डॉ.प.गोपीनाथ (2022) रहस्यमय सिद्ध भूमि तथा सूर्यविज्ञान, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी।

प्रस्तूत ग्रंथ में सूर्यविज्ञान के विषय मे रुचि जगाने हेतु सूर्यविज्ञान विषय की रोचक जानकारियों का समावेश किया गया है , ताकि उस प्राचीन ज्ञान की पिपासा को आज के युग मे पुनः जीवित किया जासके। उपरोक्त ग्रंथ में सूर्यविज्ञान की बाहरी जानकारी के ऊपरी स्तर का वर्णन किया है।

2) कविराज महामहोपाध्याय डॉ.प.गोपीनाथ (20) सिद्ध भूमि ज्ञानगंज (सूर्यविज्ञान), भारतीय विधा प्रकाशन दिल्ली।

[4] Solar Science - NASA Science https://science.nasa.gov/heliophysics/focus-areas/solar-science/

इस ग्रंथ में ज्ञानगंज के बारे में बताया गया है वहा की अध्यात्मिम व्याख्या का वर्णन किया है तथा सूर्यविज्ञान का संक्षिप्त परिचय दिया है बताया गया है, कि सूर्यविज्ञान ज्ञानगंज की धरा से उपजा ज्ञान है जो कि विज्ञान के सिद्धांतों पर कार्य करता है।

3) डॉ. भगवती प्रसाद सिंह (2021) मनीषी की लोक यात्रा , विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी।

इस पुस्तक के अंतर्गत पंडित गोपिनाथ कविराज के जीवन का विस्त्रांत वर्णन है , उनके गुरु अनुग्रह ओर साधना संबंधी बाते है ।

- **शोधपत्र की आवश्यकता –**

पंडित गोपिनाथ कविराज जी एक सिद्ध साधक व उच्चशिक्षित व्यक्ति थे उनके द्वारा अपने ग्रंथ एवं साहित्यों में वर्णित बाते केवल एक कल्पना मात्र नही है जिस सूर्यविज्ञान का वर्णन उनके साहित्यों में है उसके प्रति जनसामान्य की समझ को विकसित करने और इस ज्ञान के प्रति रुचि उतपन्न करने का प्रयास इस शोधपत्र के माध्यम से किया जा रहा है।

- **शोधपत्र का उद्देश्य –**

गोपिनाथ कविराज के साहित्य में वर्णित सूर्यविज्ञान का समाज के सामने प्रस्तुत करना।

गोपिनाथ कविराज के साहित्य में सूर्यविज्ञान का अध्ययन करना।

- **गोपीनाथ कविराज के साहित्य में सूर्यविज्ञान –**

सूर्यविज्ञान के अर्थ को जाने तो पाते है कि यह भारत से लुप्त हो चुका ज्ञान है जिसकी स्मृति अवशेष मात्र जनसामान्य के सामने उपस्थित है जो विज्ञान के अर्थ को नही जानते वे इस क्रिया के कार्यो को योगशक्ति ही समझते है परंतु वास्तव में दोनों प्रणालियों में मौलिक अंतर है ।यह समझ उच्चस्तर के साधक ही समझ पाते है। सूर्यविज्ञान से अर्थ सोरविज्ञान सेही हे परंतु इसके अतिरिक्त भी चंद्र विज्ञान, वायु विज्ञान, शब्द विज्ञान, क्षण विज्ञान के बारे में भी वर्णन मिलता हे। सूर्यविज्ञान से जो किया जासकता है अन्य विज्ञान द्वारा वही क्रिया करने में भेद

है । इस बात को जन साधारण को समझने का कोई सरल उदाहरण उपलब्ध नही है।[5] सूर्यविज्ञान एक प्रकार से प्रकृति विज्ञान है।[6]

विज्ञान की चर्चा सुनकर कोई यह न समझे कि यह पाश्चात्य विज्ञान की भाँति कोई आधारभूत विज्ञान है। वस्तुतः जड़ नाम की कोई पृथक वस्तु नहीं है। जिसे हम सामान्यतः जड़ कहते हैं, वह भी पृथक् रूप से जड़ नहीं है। श्विशेष ज्ञानश ही विज्ञान शब्द का अर्थ है। तथाकथित जड़ और चेतन। दोनों ही विज्ञान के विषय हैं। सूर्य उसका केन्द्रीय रूप और मुख्य आधार है, इसीलिए उसे सूर्य विज्ञान कहते हैं। शास्त्रों में कहा गया है कि एक ऐसा पदार्थ है, जिसका ज्ञान हो जाने पर समस्त विषय विज्ञान स्वतः उपलब्ध हो जाता है योग एवं विज्ञान की शिक्षा अत्यंत चमत्कृत है।[7]

1) सूर्य को कश्यप ओर पश्यक कहा है, कश्यप को द्रष्टा व पश्यक अदिति है अर्थात जो दिति न हो अखण्ड हो।

2) सूर्य स्वरूप – सूर्य को अंधकार का शत्रु माना है जो धन्वंतरि कहा गया है, यह आवरण रूप को हटा देता है यहा आवरण का अर्थ अविद्या ओर माया से है, रात्रि के हटने से वर्तमान और अतीत के सभी पाप इनके चिंतन से नष्ट होजाते है। पर अभ्यन्तर के पाप को हटाने के लिए इस सूर्य (बाहय) इतनी शक्ति नहीं के हटा सके अतः हमें आंतरिक ओर बाहय के सूर्य को पहचान कर चिंतन करने से भीतर का मैल हट जाएगा।

3) सूर्य विज्ञान में सूर्य का प्रकाश उसकी रश्मियों से मिल कर बना है जब अलग अलग रश्मिया घनीभूत हो कर साथ आती है तो प्रकाश की वर्तमान स्थिति हमे प्राप्त होती है जब प्रकाश को स्फटिक गोलक की सहायता से पृथक कर दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ प्रयोग कर नई सृस्टि को साकार रूप अर्थात वस्तु को जन्म दिया जा सकता है। सूर्य विज्ञान कहता है कि सभी वस्तुओं में सभी के गुण व्याप्त है।

जब सूर्य प्रकाश किसी वस्तु पर पड़ता है तो वस्तु की छाया उतपन्न होती है हम वस्तु को आत्मा और छाया को स्थूल कहेंगे , सभी वस्तु (आत्मा) सूर्य में व्यप्त है ,जब वस्तु अर्थात आत्मा को स्थूल में उतारते है तो वह घनीभूत

[5] महामहोपाध्याय, प.गोपीनाथ कविराज (2022), *रहस्यमय सिद्धभूमि तथा सूर्यविज्ञान*, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी पृष्ठ सं 66।
[6] डॉ. भगवतीप्रसाद सिंह (2021), *मनीषी की लोकयात्रा*, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी पृष्ठ स 38 ।
[7] महामहोपाध्याय, प.गोपीनाथ कविराज (20), सिद्धभूमि ज्ञानगंज (सूर्यविज्ञान), भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी पृष्ठ सं 2,3।

होजाती है , कहा गया है कि सूर्य प्रभा में सभी विधमान है और जब प्रभामंडल से किरणों एक स्थान पर एकत्र होती है तब श्रष्टि होती है । जमने में अन्य परमाणु की छाया सहायक सिद्ध होती है ,यही सूर्यविज्ञान का सूत्र है।

जब कोई वस्तु नष्ट होती है उसके परमाणु सर्वव्याप्त हो कर विचरण करते है परंतु सृष्टि के लिए उन्हें एक रेखा में स्थूल की ओर भेजे जाते है ।यह कहा गया है की जब वस्तु के परमाणु नीचे की ओर आते है तब उनके साथ परमात्मतत्व भी उतरता है तभी कहा जाता है कि कण कण में परमात्मा व्याप्त है है। सूर्य की सविता अर्थात सप्त रश्मियों में सर्व व्याप्त है अलग अलग रश्मियों को ओर विभक्त कर मूल श्वेत प्रकाश को प्राप्त कर उसपर जिस वस्तु की सृष्टि करनी हो उस वस्तु के सूत्र वाली रश्मि को आकर्षित कर जमाना होता है जो लैंस द्वारा किया जाता है ऐसा इसलिए किया जाता है ताकि एक वर्ण की रश्मि दूसरे वर्ण को नष्ट न करे इन सभी प्रक्रिया का सफल होना एक साधक की क्षमता पर भी निर्भर है।[8]

- **निष्कर्ष –**

गोपीनाथ कविराज जी की दृष्टि में सूर्यविज्ञान केवल खगोलीय अध्ययन नहीं है, बल्कि जागरण और उच्च आध्यात्मिक स्तर की प्राप्ति का साधन है। उनके अनुसार, सूर्य की ऊर्जा का सही उपयोग साधक को आत्मा की शुद्धि और मानसिक शांति की ओर ले जा सकता है।साथ ही सूर्य से एकाकार हो वैज्ञानिक सिद्धांतो के द्वारा पदार्थ ज्ञान और सृष्टि उतप्पति में सूर्य के महत्म को समझा जा सकता है।

[8] महामहोपाध्याय, प.गोपीनाथ कविराज (2022), *रहस्यमय सिद्धभूमि तथा सूर्यविज्ञान,* विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी। पृष्ठ सं 61,62,110,111,112,65,120।

➢ संदर्भ सूची –

- अवस्थी रमेशचंद्र (1996), तन्त्राचार्य गोपीनाथ कविराज और योग–तंत्र–साधना, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
- महामहोपध्याय, प. गोपीनाथ कविराज (2015), सनातन साधना की गुप्त धारा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
- महामहोपाध्याय, प.गोपीनाथ कविराज (2022), रहस्यमय सिद्धभूमि तथा सूर्यविज्ञान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी पृष्ठ सं 66।
- डॉ. भगवतीप्रसाद सिंह (2021), मनीषी की लोकयात्रा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी पृष्ठ स ं38 ।
- महामहोपाध्याय, प.गोपीनाथ कविराज (20), सिद्धभूमि ज्ञानगंज (सूर्यविज्ञान), भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी पृष्ठ सं 2,3।
- महामहोपाध्याय, प.गोपीनाथ कविराज (2022), रहस्यमय सिद्धभूमि तथा सूर्यविज्ञान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसीए पृष्ठ सं 61,62,110,111,112,65,120।
- Solar Science - NASA Science https://science.nasa.gov/heliophysics/focus-areas/solar-science/
- Solar Science - NASA Science https://science.nasa.gov/heliophysics/focus-areas/solar-science/